'पोषण और उत्पादन दोनों के लिए बाजरा अपनाएं'

बीकानेर @ पत्रिका. पश्चिमी राजस्थान में बाजरा उत्पादन बढ़ाने और किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से कृषि अनुसंधान केंद्र, बीकानेर में बुधवार को अखिल भारतीय समन्वित बाजरा परियोजना के तहत प्रथम पंक्ति प्रदर्शन एवं लाइव प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विशेषज्ञों ने किसानों को गुणवत्तायुक्त बीज, मृदा स्वास्थ्य और जैविक खेती के महत्व की जानकारी दी। कार्यक्रम में कुलगुरु डॉ. राजेंद्र बाबू दुबे ने किसानों से संवाद करते हुए कहा कि बाजरा पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख फसल होने के साथ-साथ पोषण सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण आधार है। उन्होंने किसानों से अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों का उपयोग करने, मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण करने तथा जैविक खेती को अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ऐसी उन्नत किस्मों का चयन किया जाना चाहिए, जो बेहतर उत्पादन के साथ खाद्यान्न की पोषण सुरक्षा भी सुनिश्चित करें।

एसकेआरएयू -परीक्षा आधारित गतिविधियों के प्रबंधन हेतु आनलाईन एक्सामिनेशन मैनजमेंट सिस्टम लागू होगा

बीकानेर (निष्पक्ष कलम)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए परीक्षा आधारित गतिविधियों के प्रबंधन हेतु आनलाईन एक्सामिनेशन मैनजमेंट सिस्टम लागू किया जाएगा।

विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार डॉ. देवाराम सैनी ने बताया कि विश्वविद्यालय अकादमिक परिषद की बुधवार को आयोजित 67वीं बैठक में इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया।

इसके तहत विद्यार्थियों के लिए आनलाईन पंजीयन तथा डाटाबेस प्रबंधन की सुविधा उपलब्ध होगी। परीक्षा के आवेदन लेने से प्रवेश पत्र जारी करने तक की समस्त प्रक्रियाएं आनलाईन होगी। साथ ही आंतरिक मूल्यांकन तथा प्रायोगिक परीक्षाओं के अंक आनलाईन जमा करवाने तथा आटोमेटेड रिजल्ट प्रोसेसिंग की सुविधा विकसित की जाएगी। मार्कशीट, माइग्रेशन सर्टिफिकेट व अन्य सर्टिफिकेट जारी करने के समस्त कार्य आनलाईन किए जाएंगे। परीक्षा रिकार्ड का डिजीटल संरक्षण भी किया जाएगा। इसके लागू होने से परीक्षा प्रणाली में अधिक निष्पक्षता,पारदर्शिता, सटीकता व समयबद्धता आ सकेगी।

कुलगुरु डॉ राजेंद्र बाबू दुबे की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में परिषद के मनोनीत सदस्य डॉ बी एल छींपा, आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ शांति कुमार शर्मा, विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ देवाराम सैनी सहित सभी डीन डायरेक्टर्स उपस्थित हुए।

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विजय प्रकाश, अधिष्ठता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, छात्र कल्याण निदेशक डॉ एच एल देशवाल, परीक्षा नियंत्रक डॉ वी एस आचार्य, डॉ आर एस राठौड़, सहित सभी डीन डायरेक्टर्स और अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

15 दिवसीय उर्वरक विक्रेता प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण सम्पन्न

राजस्थान प्रदीप रिपोर्टर

बीकानेर। एसकेआरएयू के कृषि विज्ञान केंद्र, बीकानेर में 15 दिवसीय उर्वरक विक्रेता प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण बुधवार को सम्पन्न हुआ।

प्रशिक्षण में उर्वरक विक्रेताओं को उर्वरक प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य, उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण की जानकारी व हैंड्स आन ट्रेनिंग दी गई। समापन सत्र में कुल गुरु डॉ. आर. बी. दुबे ने कहा कि कृषि का भविष्य संतुलित, वैज्ञानिक एवं आवश्यकता-आधारित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने में निहित है। बढ़ती जनसंख्या, सीमित प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन, मृदा उर्वरता में गिरावट जैसी चुनौतियों के बीच कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और मृदा की दीर्घकालीन उर्वरा शक्ति बनाए रखना आवश्यक है। ऐसे में विज्ञान का सही समागम करना आवश्यक है।

उर्वरक विक्रेता किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु बताते के रूप में कार्य करते हैं।

डॉ दुबे ने कहा कि किसान खेती से संबंधित तकनीकी जानकारी के लिए सबसे पहले स्थानीय उर्वरक विक्रेताओं से संपर्क करते हैं। इसलिए यदि विक्रेता वैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित होंगे तो वे किसानों को फसल एवं मृदा की आवश्यकता के अनुरूप सही उर्वरक, उचित मात्रा, सही समय एवं सही विधि से उपयोग की सलाह दे सकेंगे। इससे उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा मिलेगा, उत्पादन लागत में कमी आएगी तथा फसल उत्पादकता में वृद्धि होगी ।

डॉ. दुबे ने किसानों को नियमित रूप से मृदा परीक्षण करवाते हुए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश ही नहीं, बल्कि सल्फर, जिंक, आयरन, बोरॉन सहित अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों के वैज्ञानिक उपयोग के प्रति भी जागरूक बनें। प्रशिक्षित उर्वरक विक्रेता किसानों के विश्वसनीय तकनीकी सलाहकार बन कर किसानों को जागरूक करने में योगदान दें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. दीपाली धवन ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य कृषि तकनीकों को प्रयोगशालाओं से खेत तक पहुँचाना है। कृषि विज्ञान केंद्र, किसानों, कृषि उद्यमियों तथा कृषि आदान विक्रेताओं के क्षमता विकास के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण आयोजित कर रहा है।

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, डॉ. मदन लाल रैगर ने प्रशिक्षण की विस्तृत जानकारी दी ।

सहायक आचार्य डॉ सुशील कुमार वर्मा ने मृदा स्वास्थ्य, पोषक तत्वों की कमी के लक्षण, फसलवार उर्वरक अनुशंसाएँ, उर्वरक उपयोग दक्षता तथा आधुनिक पोषक तत्व प्रबंधन तकनीकों पर व्याख्यान दिए। उन्होंने मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक सिफारिशों के महत्व से अवगत कराया तथा विभिन्न फसलों में संतुलित उर्वरक उपयोग के व्यावहारिक पहलूओं को समझाया।सहायक आचार्य डॉ. सुशील कुमार खारिया ने उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण, जैव उर्वरकों की उपयोगिता, सूक्ष्म पोषक तत्वों की भूमिका, उर्वरक भंडारण, उर्वरक (नियंत्रण) आदेश-1985, लाइसेंस संबंधी प्रावधान तथा किसानों को गुणवत्तापूर्ण कृषि आदान उपलब्ध कराने के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों को उर्वरकों के सुरक्षित भंडारण, परिवहन तथा गुणवत्ता बनाए रखने के वैज्ञानिक उपाय भी बताए।प्रगतिशील किसान शंभू सिंह ने अपने अनुभव साझा किए।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को प्रयोगशाला आधारित अभ्यास, उर्वरकों की पहचान, मृदा नमूना संग्रहण की वैज्ञानिक विधि, पोषक तत्वों की कमी के लक्षणों की पहचान, विभिन्न उर्वरकों के उपयोग की तकनीक, कृषि कानूनों एवं नियमों की जानकारी प्रदान की गई तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

एसकेआरएयू : परीक्षा आधारित गतिविधियों के प्रबंधन हेतु आनलाईन एक्सामिनेशन मैनजमेंट सिस्टम लागू होगा

अकादमिक परिषद की 67 वीं बैठक में विभिन्न प्रस्तावों का हुआ अनुमोदन

राजस्थान प्रदीप रिपोर्टर

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए परीक्षा आधारित गतिविधियों के प्रबंधन हेतु आनलाईन एक्सामिनेशन मैनजमेंट सिस्टम लागू किया जाएगा। विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार डॉ देवाराम सैनी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अकादमिक परिषद की बुधवार को आयोजित 67वीं बैठक में इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया।

इसके तहत विद्यार्थियों के लिए आनलाईन पंजीयन तथा डाटाबेस प्रबंधन की सुविधा उपलब्ध होगी। परीक्षा के आवेदन लेने से प्रवेश पत्र जारी करने तक की समस्त प्रक्रियाएं आनलाईन होगी,साथ ही आंतरिक मूल्यांकन तथा प्रायोगिक परीक्षाओं के अंक आनलाईन जमा करवाने तथा आटोमेटेड रिजल्ट प्रोसेसिंग की सुविधा विकसित की जाएगी। मार्कशीट, माइग्रेशन सर्टिफिकेट व अन्य सर्टिफिकेट जारी करने के समस्त कार्य आनलाईन किए जाएंगे। परीक्षा रिकार्ड का डिजीटल संरक्षण भी किया जाएगा। इसके लागू होने से परीक्षा प्रणाली में अधिक निष्पक्षता,पारदर्शिता, सटीकता व समयबद्धता आ सकेगी।

कुलगुरु डॉ राजेंद्र बाबू दुबे की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में परिषद के मनोनीत सदस्य डॉ बी एल छींपा, आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ शांति कुमार शर्मा, विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ देवाराम सैनी सहित सभी डीन डायरेक्टर्स उपस्थित हुए। बैठक में पूर्व में आयोजित एकेडमी परिषद की बैठक की एक्शन टेकन रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। डॉ दुबे ने कहा कि विभिन्न संकाय अपने यहां विषयों और मुद्दों को एकेडमिक काउंसिल में रखें , जिससे बोम में ले जाकर इस इन विषयों पर उचित निर्णय लिया जा सके।

डॉ छीपा ने सभी सदस्यों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के हित में आवश्यक निर्णय समयबद्ध रूप से लिए जाएं यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक समन्वय से काम किया जाए। सहायक महानिदेशक शर्मा ने डिजिटल माध्यम से बैठक में शामिल होकर अपनी बात रखी।

बैठक में विद्यार्थियों, एलुमनी तथा अभिभावकों के फीडबैक हेतु निर्धारित फीडबैक फार्मेट तैयार करने के प्रस्ताव का भी अनुमोदन किया गया। पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज रेगुलेशंस 2026 के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया।

बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विजय प्रकाश, अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, छात्र कल्याण निदेशक डॉ एच एल देशवाल, परीक्षा नियंत्रक डॉ वी एस आचार्य, डॉ आर एस राठौड़, सहित सभी डीन डायरेक्टर्स और अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर
बीकानेर ज़िला 09-07-2026

डिजिटल राह पर कृषि विश्वविद्यालय

अब ऑनलाइन होगा परीक्षा का सिस्टम, चुस्त-दुरुस्त बनेगी व्यवस्था

बीकानेर | स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में अब परीक्षा संबंधी कार्यों के लिए विद्यार्थियों को दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। विश्वविद्यालय की अकादमिक परिषद की 67वीं बैठक में छात्र-हित में बड़ा कदम उठाते हुए 'ऑनलाइन एग्जामिनेशन मैनेजमेंट सिस्टम' लागू करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई है। कुलगुरु डॉ. राजेंद्र बाबू दुबे की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में शैक्षणिक सुधारों से जुड़े कई अन्य महत्वपूर्ण फैसले भी लिए गए। इसका मुख्य उद्देश्य परीक्षा प्रणाली में अधिक पारदर्शिता, सटीकता और समयबद्धता सुनिश्चित करना है। बैठक में परिषद के मनोनीत सदस्य डॉ. बीएल छींपा, आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ. शांति कुमार शर्मा और विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. देवाराम सैनी सहित सभी डीन व डायरेक्टर्स उपस्थित रहे।

परीक्षा फॉर्म से लेकर माइग्रेशन सर्टिफिकेट तक, सब मिलेगा एक क्लिक पर

नए ऑनलाइन एग्जामिनेशन मैनेजमेंट सिस्टम के तहत विद्यार्थियों को निम्नलिखित डिजिटल सुविधाएं मिलेंगी:

डेटा प्रबंधन: छात्रों के लिए ऑनलाइन पंजीयन तथा डेटाबेस प्रबंधन की आधुनिक सुविधा उपलब्ध होगी।

- **वेरिफिकेशन:** परीक्षा के आवेदन लेने से लेकर प्रवेश पत्र (एडमिट कार्ड) जारी करने तक की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी।
- **अंक प्रविष्टि:** आंतरिक मूल्यांकन (इंटरनल मार्किंग) तथा प्रायोगिक परीक्षाओं के अंक ऑनलाइन जमा करवाए जा सकेंगे।
- **सर्टिफिकेट:** मार्कशीट, माइग्रेशन सर्टिफिकेट व अन्य दस्तावेज जारी करने के समस्त कार्य ऑनलाइन किए जाएंगे।
- **सुरक्षा:** विश्वविद्यालय के परीक्षा रिकॉर्ड का डिजिटल संरक्षण किया जाएगा, जिससे डेटा लीक या गुम होने का खतरा खत्म होगा।

एसकेआरयू अकादमिक परिषद की 67वीं बैठक में विभिन्न प्रस्तावों का हुआ अनुमोदन

परीक्षा आधारित गतिविधियों के प्रबंधन हेतु आनलाईन एक्सामिनेशन मैनजमेंट सिस्टम लागू होगा

बीकानेर, (निसं)। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए परीक्षा आधारित गतिविधियों के प्रबंधन हेतु आनलाईन एक्सामिनेशन मैनजमेंट सिस्टम लागू किया जाएगा। विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार डॉ देवाराम सैनी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अकादमिक परिषद की बुधवार को आयोजित 67वीं बैठक में इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। इसके तहत विद्यार्थियों के लिए आनलाईन पंजीयन तथा डाटाबेस प्रबंधन की सुविधा उपलब्ध होगी। परीक्षा के आवेदन लेने से प्रवेश पत्र जारी करने तक की समस्त प्रक्रियाएं आनलाईन होगी, साथ ही आंतरिक मूल्यांकन तथा प्रायोगिक परीक्षाओं के अंक आनलाईन जमा करवाने तथा आटोमेटेड रिजल्ट प्रोसेसिंग की सुविधा विकसित की जाएगी। मार्कशीट, माइग्रेशन सर्टिफिकेट व अन्य सर्टिफिकेट जारी करने के समस्त कार्य आनलाईन किए जाएंगे। परीक्षा रिकार्ड का डिजीटल संरक्षण भी किया जाएगा। इसके लागू होने से परीक्षा प्रणाली में अधिक निष्पक्षता,पारदर्शिता, सटीकता व समयबद्धता आ सकेगी।

कुलगुरु डॉ राजेंद्र बाबू दुबे की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में परिषद के मनोनीत सदस्य डॉ बीएल छींपा, आईसीएआर के सहायक महानिदेशक डॉ शांति कुमार शर्मा, विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ देवाराम सैनी सहित सभी डीन डायरेक्टर्स उपस्थित हुए। बैठक में पूर्व में आयोजित एकेडमी परिषद की बैठक की एक्शन टेकन रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। इस अवसर पर डॉ दुबे ने कहा कि विभिन्न संकाय अपने यहां के विषयों और मुद्दों को एकेडमिक काउंसिल में रखें, जिससे बोम में ले जाकर इस इन विषयों पर उचित निर्णय लिया जा सके। डॉ छीपा ने सभी सदस्यों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के हित में आवश्यक निर्णय समयबद्ध रूप से लिए जाएं यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक समन्वय से काम किया जाए। सहायक महानिदेशक शर्मा ने डिजिटल माध्यम से बैठक में शामिल होकर अपनी बात रखी। बैठक में विद्यार्थियों, एलुमनी तथा अभिभावकों के फीडबैक हेतु निर्धारित फीडबैक फार्मेट तैयार करने के प्रस्ताव का भी अनुमोदन किया गया। पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज रेगुलेशंस 2026 के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया। बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ दीपाली धवन, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ विजय प्रकाश, अधिष्ठाता सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय डॉ वीर सिंह, छात्र कल्याण निदेशक डॉ एच एल देशवाल, परीक्षा नियंत्रक डॉ वी एस आचार्य, डॉ आर एस राठौड़, सहित सभी डीन डायरेक्टर्स और अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

15 दिवसीय उर्वरक विक्रेता प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण का समापन

बीकानेर @ पत्रिका. एसकेआरएयू के कृषि विज्ञान केंद्र में 15 दिवसीय उर्वरक विक्रेता प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण बुधवार को सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण में उर्वरक विक्रेताओं को उर्वरक प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य, उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण की जानकारी व हैंड्स आन ट्रेनिंग दी गई।

समापन सत्र में कुलगुरु डॉ. आरबी दुबे ने कहा कि कृषि का भविष्य संतुलित, वैज्ञानिक एवं आवश्यकता-आधारित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने में निहित है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. दीपाली धवन ने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य कृषि तकनीकों को प्रयोगशालाओं से खेत तक पहुंचाना है। कृषि विज्ञान केंद्र, किसानों, कृषि उद्यमियों तथा कृषि आदान विक्रेताओं के क्षमता विकास के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण आयोजित कर रहा है। इस दौरा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. मदन लाल रैगर उपस्थित रहे।

मृदा स्वास्थ्य संरक्षण के लिए जैविक खेती अपनाने की दिशा में आगे बढ़ें किसान : डॉ दुबे

बीकानेर, (निसं)। कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में अखिल भारतीय समन्वित बाजरा परियोजना के तहत बुधवार को किसानों के लिए प्रथम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन कर लाइव ट्रेनिंग दी गई। इस अवसर पर कुलगुरु डॉ राजेंद्र बाबू दुबे ने किसानों को जैविक खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों से संवाद करते हुए उन्होंने कहा कि बाजरा पश्चिमी राजस्थान की मुख्य फसल है। अच्छी गुणवत्ता का बीज इस्तेमाल कर मृदा स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए फ़सल उगाएं। किसान ऐसी वैरायटी उगाएं जिससे खाद्यान्न की पोषण सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने किसानों को रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने तथा जैव उर्वरक अपनाने की सलाह दी। डॉ दुबे ने कहा कि ग्रीन मैन्योर मृदा स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। जमीन किसानों का बैंक है इसमें अच्छी मात्रा में जैविक खाद डालें तथा और मृदा स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि दलहनी फसलों को लगाएं तथा फ़सल हार्वेस्टिंग के बाद जड़ें ज़मीन में दबा दें। इसका सीधा लाभ मृदा की गुणवत्ता बढ़ाने में हो सकेगा। अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा ने कहा कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में बाजरा व अन्य मिलेट्स अहम भूमिका में है। भोजन में पोषण सुनिश्चित करने की दिशा में सरकार द्वारा भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। बाजरा के हाइब्रीड वैरायटी में जिंक और आयरन की अधिकता है। किसान इसे उगाएं और गुणवत्ता युक्त उपज लें। एआरएस प्रभारी डॉ भूपेंद्र सिंह शेखावत ने स्वागत उद्बोधन दिया तथा प्रथम पंक्ति प्रदर्शन आदान वितरण कार्यक्रम की रुपरेखा से अवगत करवाया। संचालन डॉ बीडीएस नाथावत ने किया। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ परमेन्द्र सिंह ने बताया कि किसानों को एफ एल डी के तहत फेरस सल्फेट, जिंक सल्फेट, ट्राईकोडर्मा व बाजरा के उच्च गुणवत्ता युक्त हाइब्रीड बीज का वितरण किया गया है। डॉ सुजीत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'प्रशिक्षित उर्वरक विकेता किसानों को जागरूक करें'

एसकेआरएयू के कुलगुरू राजेन्द्र बाबू दुबे नेउर्वरक प्रशिक्षण के समापन पर विक्रेताओं को प्रमाण-पत्र वितरित किए।

बीकानेर, (कासं)। एसकेआरएयू के कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर में 15 दिवसीय उर्वरक विक्रेता प्रमाण-पत्र प्रशिक्षण बुधवार को सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण में उर्वरक विक्रेताओं को उर्वरक प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य, उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण की जानकारी व हैंड्स आन ट्रेनिंग दी गई। समापन सत्र में कुलगुरू डॉ. आर. बी. दुबे ने कहा कि कृषि का भविष्य संतुलित, वैज्ञानिक एवं आवश्यकता-आधारित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने में निहित है। बढ़ती जनसंख्या, सीमित प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन, मृदा उर्वरता में गिरावट जैसी चुनौतियों के बीच कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और मृदा की दीर्घकालीन उर्वरा शक्ति बनाए रखना आवश्यक है। ऐसे में विज्ञान का सही समागम करना आवश्यक है। उर्वरक विक्रेता किसानों और कृषि वैज्ञानिकों के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु बताते के रूप में कार्य करते हैं। डॉ दुबे ने कहा कि किसान खेती से संबंधित तकनीकी जानकारी के लिए सबसे पहले स्थानीय उर्वरक विक्रेताओं से संपर्क करते हैं। इसलिए यदि विक्रेता वैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित होंगे तो वे किसानों को फसल एवं मृदा की आवश्यकता के अनुरूप सही उर्वरक, उचित मात्रा, सही समय एवं सही विधि से उपयोग की सलाह दे सकेंगे। इससे उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा मिलेगा, उत्पादन लागत में कमी आयेगी तथा फसल उत्पादकता में वृद्धि होगी । डॉ. दुबे ने किसानों को नियमित रूप से मृदा परीक्षण करवाते हुए संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन अपनाने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश ही नहीं बल्कि सल्फर, जिंक, आयरन, बोरॉन सहित अन्य सूक्ष्म पोषक तत्वों के वैज्ञानिक उपयोग के प्रति भी जागरूक बनें। प्रशिक्षित उर्वरक विकेता किसानों के विश्वसनीय तकनीकी सलाहकार बनकर किसानों को जागरूक करने में योगदान दें।